वैश्वीकरण: एक ऐतिहासिक परख और हिन्दी

(जिन्सी जोसफ)

(शोध छात्रा, एन.एस. एस. हिन्दू कॉलेज, चांगनाचेरी।)

सारांश: अब प्रत्येक देश के अधिक से अधिक लोग यह सोचने लगे हैं कि वे अपने राष्ट्र में ही नही बल्कि विश्व ग्राम में रह रहे है। लोगों में ऐसी सोच लाने का श्रेय वैश्वीकरण के है। कुछ विचारक इसे आर्थिक अवधारणा समझे है तो कुछ संस्कृतिक आदान- प्रदान वहीं कुछ विचारको केलिए एक बृहद सामाजिक प्रक्रिया है।

मूल शब्द: वैश्वीकरण , हिन्दी, परिभाषा

प्रस्तावना:भूमंडलीकरण शब्द मूल रूप से 'भूमंडल' शब्द से बना है।'भू' का अर्थ है भूमि(१) तथा ' मंड़ल 'का अर्थ है परिधि(२)। इसी तौर पर देखें तो भूमंडलीकरण के अर्थ है विश्व की परिधि करना। भूमंडलीकरण का पर्यायवचि शब्द है वैश्वीकरण।

वैश्वीकरण का इतिहास बहुत पुराना नहीं है। सदियों से पहले वैश्वीकरण की अवधारणा हुई थी। लेकिन बीसवीं शताब्दी के अंतिम दो दशकों से ही इसके लक्षण साफ तौर पर दिखाई देने लगे। खासकर तब, जब विश्व के दो शक्तिशाली देशों में से एक सोवियत संघ का विघटन हुआ। इस विघटन के बाद अमेरिका को चुनौती देने वाला कोई भी देश नहीं बचा था। इसलिए अमेरिका पूरी आज़ादी के साथ वैश्वीकरण को प्रचारित करने में लग गया। वैश्वीकरण के इतिहास को तीन चरणों में देखा जा सकता है।

पहला चरण 1870 से 1914 तक का है। इस काल में रेलवे, टेलीग्राफ व्यवस्था तथा अंतराष्ट्रीय वित्तीय व्यवस्था के आदान-प्रदान के लिए नए तौर तरीकों और तकनीकी के साधनों का उपयोग हुआ। इस समय में रोजगार के नए मौके बने और साम्यवादी देश सोवियत संघ और चीन भी इसके चपेट में आने से अपने आपको नहीं बचा सके। अब इसने दुनिया के छोटे बड़े सभी देशों को इसने अपना घर बना लिया। यह सिर्फ आर्थिक जगत तक सीमित नहीं है,बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक, और राजनैतिक क्षेत्र भी इसके चपेट में है। डॉ. भूपेन्द्रराय चौधरी की राय विचारणीय है- "अब भूमंडलीकरण का अर्थ है सारी दुनिया को एक ही रंग में

रंगाना। स्पष्ट रूप में कहा जाए तो अमेरिकी संस्कृति और जीवन शैली को सारे संसार में लादना।" (३)

दूसरा चरण बहुराष्ट्रीयकरण का रहा, जिसका समय 1950 से 1960 तक है। 1914 से 1950 तककेअंतरालमेंवैश्विकरूपसेबहुतबडीघटनाएंघटी।पहलेविश्वयुद्ध, महामन्दीफिरद्वितीयविश्वयुद्ध।यानियहसबसेबड़ीत्रसदीकासमयथा।जिसकेपरिणाम स्वरूपनाव-
राष्ट्रवादकाउदयहुआ।प्रमुखइतिहासकर्ताअभयकुमारदुबेइसकासमर्थनकरतेहुएकहाहै- "

नब्बेकेदशककोवित्तीयपूंजीकेभूमंडलीकरणकेलिएजानाजाताहै।इसीदशकमेंभूमण्डली करणकीपरिघटनाअपनेसर्वाधिकचरमरूपमेंप्रगटहुई।उन्नीसवींसदीमेंहुएमुक्तबाजार वालेभूमंडलीकरणकीभांतिहीइसबारभीइसकेकेंद्रमेंएकमहाशक्ति(संयुक्तराज्यअमेरिका) , एकमहा-मुद्रा(अमेरिकीडालर)
औरइंटरनेटऔरउपग्रहीयचैनलोंकेरूपमेंहुईसंचारक्रांतिथी।" (४)

आजहमवैश्वीकरणकेतीसरेचरणमेंहै, जिसकासमय 20 वीशतीसेअबतकचलरहाहै।लेकिन सही मायने में वैश्वीकरण सोवियत संघ के विघटन के बाद से ही माना जा सकता है।

वैश्वीकरण की परिभाषा

एकदृष्टिकोणसेवैश्वीकरणएकऐसासांस्कृतिकविश्वक्रमकेअस्तित्वमेंआनेकीव्यवस्थाहै, जोवस्तुतःआधुनिककालसेआयाहुआअधिनिवेशीक्रमपरप्रश्नचिंन्हलगाताहैऔरभूमंडलीयसंबंधोकोपरिभाषितकरतारहाहै।

एथोनीगिडन्सकेअनुसार"विभिन्नलोगोंऔरदुनियाकेविभिन्नक्षेत्रोंकेबीचमेंबढ़तीहुईअन्योन्याश्रिततायापरिस्थितिकताहीभूमंडलीकरणहै।यहपारस्परिकतासामाजिकऔर आर्थिकसंबंन्धोंमेंहोतीहै।इसमेंसमयऔरस्थानसिमटजातेहैं।"(५)

इसीप्रकारमोलकामवार्टसनेअपनीपुस्तक(ग्लोबलाइजेशन1998) मेंवैश्वीकरणकीइसीप्रकारदीगयी–" वैश्वीकरणएकसामाजिकप्रक्रियाहै, जिसमेंसामाजिकतथासांस्कृतिकव्यवस्थापरजोभौगोलिकदबावहोतेहैं,

पीछेहटजातेहैंऔरलोगभीइसतथ्यसेअवगतहोजातेहैकिअबभूगोलकीसीमाएंबेमतलब है।"(६)

ग्लोबलाइजेशन का प्रमुख चिंतक श्री.अप्पदुरै का कहना है- "भूमंडलीकरण के विघटनात्मक सांस्कृतिक बहाव के आधार पर उतपन्न जगहें हैं- जनजातीय परिदृश्य, मिडियाकृत, टेक्नोलॉजी,एवं आर्थिक परिदृश्य। प्रत्यय स्वरूप परिदृश्य अथवा परिदृश्य वस्तूतः भूमंडलीकृत विश्व के उन्हीं तरल गत्यात्मक, निराकार स्वभाव से युक्त जगहों का संवेद करता है जिसके मूल मे अंतरराष्ट्रीय पूँजी का जोरदार हाथ प्रवृत्त होता है।

प्रभा खेतान अपनी पुस्तक 'भूमंडलीकरण ब्रांडसंस्कृति और राष्ट्र' में वैश्वीकरण की परिभाषा इस प्रकार दी है- "भूमंडलीकरण वह प्रक्रिया है जो वित्त-पूंजी के निवेश , उत्पादन और बाजार द्वारा राष्ट्रीय सीमा मे ही वर्चस्वी नहीं, बल्कि राष्ट्रीय सीमा से परे भूमंडलीय आधार पर निरन्तर अपना प्रसार करना चाहती है। इसका निर्णय क्षेत्र सारी दुनिया है।(७)

वैश्वीकरण के दौर में हिन्दी

आज वैश्वीकरण की पहुंच व्यापार से लेकर जीवन के सभी क्षेत्रों तक व्याप्त है। विश्व भर को देखें तो भारत सर्वाधिक विविधतावों वाला देश है। विविधता के बावजूद भी हिन्दी विश्व स्तर पर अपना महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। लेकिन अंग्रेजी शब्दों का बोलबाला आ जाने के फलस्वरूप हिन्दी के स्वरूप में बदलाव आ रहा है और हिंग्लिश के रूप में एक नया भाष रूप अवतरित होने लगा है। 90 के दशक में भारत में उदारीकरण, बाज़ारीकरण और वैश्वीकरण की प्रक्रिया ने अपने साथ संचार क्रांति लेकर आया, परिणामस्वरूप केबल, इंटरनेट, मोबाइल के माद्यम से एक नई हिंदी गटी जा रही है। यह हिन्दी फिल्मों, सीरियलों, विज्ञापनो के माद्यम से तेजी से फैल रही है।

संदर्भ सूची

1. डॉ. नगेन्द्र नाथ वसु, हिन्दी विश्व कोश, पृ- 212
2. वहीं, पृ –486
3. डॉ. भूपेन्द्रराय चौधरी, भूमंडलीकरण तथा हिन्दी आदि अन्य भारतीय भाषाओं एवं बोलियों के अस्मिता का प्रश्न, पृ – 11

4. अभयकुमारदुबे, भारतकाभूमंडलीकरण, पृ- 33
5. एमएलदोशी, आधुनिकताउत्तरआधुनिकताएवंनवसमाजशास्त्रीयसिद्धान्त, पृ- 316
6. दोशी, आधुनिकताउत्तरआधुनिकताएवंनवसमाजशास्त्रीयसिद्धान्त, पृ- 322
7. प्रभा खेतान, 'भूमंडलीकरण:ब्रांड संस्कृति और राष्ट्र', पृ- 15